खंड - 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1-6 प्राकृतिक पदार्थों की बढ़ती लोकप्रियता

भारत सरकार के एक सहकारी उपक्रम 'खादी' ने देसी आहार का आरंभ किया है। वैसे तो यह कुछ समय पहले से ही प्राकृतिक ढंग से उगाए उत्पाद जैसे दालें, कॉफी और चावल बाजार में ला चुका है। इसके अलावा पुणे के समीप अनेक खेत पूर्णतः प्राकृतिक ढंग से फसल उगा रहे हैं। दार्जिलिंग के चाय बागानों ने भी प्राकृतिक ढंग से चाय उगाने का प्रयोग आरंभ किया था जिसे अब एक दशक से अधिक समय हो गया है क्योंकि विदेशी उपभोक्ताओं द्वारा प्राकृतिक ढंग से उगाई चाय की मांग बढ़ गई थी।

समस्त विश्व में मनुष्य द्वारा उपभोग किये जाने वाले खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों के अधिकाधिक बढ़ते प्रयोग के प्रति जागरूकता अब बढ़ गई है। प्राकृतिक रूप से उगाए पदार्थ वे हैं जिन्हें रासायनिक खाद या कीटनाशकों का प्रयोग किये बगैर प्राकृतिक ढंग से उगाया जाता है। यह एक समग्र अवधारणा है जिसके तहत खेती एवं कृषि कार्यों में प्रकृति के सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खाद्य पदार्थों की मांग के पीछे एक अन्य कारण लोगों की स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जागरूकता में वृद्धि भी है। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे ऐसे एक कार्यक्रम की प्रबंधक ममता शर्मा कहती हैं, "अब लोग इन्हें खरीदने में रूचि दिखा रहे हैं, प्राकृतिक खाद्य पदार्थों को खरीदने में भारतीय किसी विदेशी से कम नहीं हैं।" खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा आरंभ किये देसी आहार का उद्देश्य उपभोक्ता को पौष्टिक और रसायन मुक्त विकल्प प्रदान करना है। देसी आहार के अंर्तगत मिलने वाले उत्पादों की सूची लंबी है और इनमें बासमती चावल, भूरा चावल, चाय, कॉफी,दाल, मिर्च और शहद आदि शामिल हैं। ये सभी उत्पाद पूर्व उपलब्ध उत्पादों से बहुत बेहतर हैं।

आज ऐसे अनेक गैर-सरकारी संस्थान हैं जो प्राकृतिक शाकाहारिता को बढ़ावा दे रहे हैं। ऐसा ही एक संस्थान अहिंसा रिसर्च फाऊंडेशन है। इसके महासचिव एल.एन.मोदी कहते हैं, "प्राकृतिक ढंग से उगाए कृषि उत्पादों का विवेचित मेल कहा जा सकता है। यह पर्यावरण अनुकूल परिवेश में उगाए शाकाहारी भोजन के उपभोग का प्रतीक है और इसमें वनस्पति, जीव जंतु या मानव जीवन को कोई हानि भी नहीं पहुँचती है। ऐसा भोजन न केवल स्वास्थ्यवर्द्धक होता है बल्कि शाकाहारिता के वास्तविक रूप का प्रतीक है।"

प्राकृतिक रूप से उगाए खाद्य पदार्थों के साथ-साथ अब प्राकृतिक रूप से उगाए कपास का चलन भी बढ़ता जा रहा है। कपास पर चूंकि हानिकारक कीटों का हमला अधिक होता है इसलिए कपास उगाने वाले किसान रासायनिक खादों और कीटनाशकों का सर्वाधिक प्रयोग करते हैं। कपास को जब प्राकृतिक ढंग से उगाया जाता है तो कीटों के प्रकोप की आशंका भी घटायी जाती है। इस ढंग से उगायी कपास भी उच्च कोटि की होती है। इससे तैयार सूती कपड़ा अधिक टिकाऊ होता है और इसकी दिखावट और चमक भी बेहतर होती है। भारत में कपास की प्राकृतिक ढंग से खेती मध्य प्रदेश में भोपाल के समीप और गुजरात में कच्छ के निकट होती है।

1 कितने समय पहले से चाय की खेती नए ढंग से शुरू की गई?

चाय की खेती आरंभ हुए एक दशक से ज़्यादा हो चुका है। [1]

2 प्राकृतिक पदार्थों से क्या मतलब है?

प्राकृतिक रूप से उगाए गए पदार्थ वे है जिन्हें रासायनिक खाद या कीटनाशकों का प्रयोग किए बगैर [1]

प्राकृतिक ढंग से उगाया जाता है।

3 प्राकृतिक पदार्थों की बढ़ती मांग के अन्य कारण क्या हैं?

मनुष्य द्वारा उपभोग किये जाने वाले खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों के अधिकाधिक बढ़ते प्रयोग के प्रति [1]
जागरूकता अब बढ़ गई है।

4 प्राकृतिक पदार्थ सेहत के लिए बेहतर होने के अलावा और किसका प्रतीक हैं?

यह पर्यावरण अनुकूल परिवेश में उगाए शाकाहारी भोजन के उपभोग का प्रतीक है और इसमें वनस्पति, [1]
जीव-जंतु या मानव जीवन को कोई हानि भी नहीं पहुँचती है।

5 खाद्य पदार्थों के अलावा अन्य किस चीज़ को उगाया जा रहा है?

प्राकृतिक रूप से कपास उगाया जाता है। [1]

6 प्राकृतिक ढंग से कपास उगाने के क्या फ़ायदे मिले हैं?

प्राकृतिक ढंग से उगाई कपास उच्चकोटि की होती है और इससे बेहतर सूती कपड़ा बनता है। [1]

[अंक: 6]

www.smartexamresources.com